International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 01(III) (Special Issue), January- March, 2026, pp. 183-189

सामरिक स्वायत्तता से बहु–संरेखण तक: बहुध्रुवीयता के युग में भारत की विकसित विदेश नीति

शालिनी शर्मा*

शोध विद्यार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबडेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी चुड़ेला, झुंझुनू, राजस्थान।

*Corresponding Author: shalini.blal@gmail.com

सार

21वीं सदी की उभरती हुई बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था शक्ति के फैले हुए केंद्रों, महान शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा और खंडित वैश्विक शासन की विशेषता है। यह स्थापित विदेश नीति सिद्धांतों के गहन पुनर्मूल्यांकन को आवश्यक बनाती है। यह शोध पत्र भारत की विदेश नीति में हुए मौलिक परिवर्तन की जाँच करता है, जिसमें शीत युद्ध के मूलभूत गुटनिरपेक्षता से लेकर समकालीन बहु–संरेखण और सामरिक स्वायत्तता तक के उसके विकास का पता लगाया गया है।गुटनिरपेक्षता की पारंपरिक अवधारणा को व्यावहारिक रूप से सामरिक स्वायत्तता में अद्यतन किया गया है, जो नई दिल्ली को प्रतिबंधात्मक गठबंधनों से बंधे बिना कई प्रतिस्पर्धी शक्तियों संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, चीन और यूरोपीय संघ के साथ मुद्देआधारित जुड़ाव को आगे बढ़ाने की अनुमति देती है। यह परिवर्तन भारत के बढ़ते भू–राजनीतिक हितों, बढ़ते आर्थिक प्रभाव और अपने राष्ट्रीय विकास को सुरक्षित करने की अनिवार्यता से प्रेरित है। बहु–संरेखण की रणनीति क्वाड, ब्रिक्स, और जी 20 जैसे विविध समूहों में भारत की सक्रिय और एक साथ भागीदारी के माध्यम से प्रकट होती है, जहाँ यह लगातार ग्लोबल साउथ के हितों का समर्थन करता है। यह पत्र तर्क देता है कि यह सामरिक पुनर्संरचना केवल एक अनुकूलन नहीं है, बल्कि एक दृढ़ बहुपक्षवाद है, जो भारत को एक वैश्विक धुरी राज्य के रूप में स्थापित करता है। नई दिल्ली की सक्रिय कूटनीति, जो उसकी पड़ोसी पहले, एक्ट ईस्ट और लिंक वेस्ट नीतियों से परिलक्षित होती है, क्षेत्रीय और वैश्विक गतिशीलता को संतुलित करने के बजाय आकार देने की प्रतिबद्धता दर्शाती है। यह अध्ययन चीन–पाकिस्तान गठजोड़ को प्रबंधित करने और भू–राजनीतिक तनावों को नेविगेट करने सहित इस दृष्टिकोण में निहित चुनौतियों का विश्लेषण करेगा, साथ ही यह भी प्रदर्शित करेगा कि भारत का नया लचीलापन अपने सामरिक स्थान को अधिकतम करने और एक नियम–आधारित, न्यायसंगत, और स्थिर बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की दृष्टि को आगे बढ़ाने में कैसे मदद करता है।।

शब्दकोश: *विदेश नीति, सामरिक स्वायत्तता, बहु संरेखण।*

प्रस्तावना

भारत की विदेश नीति ऐतिहासिक रूप से एक ऐसे वैचारिक आधार पर टिकी रही है जो औपनिवेशिक अनुभव से उपजी संप्रभुता की रक्षा और वैश्विक स्तर पर निर्णय लेने की स्वतंत्रता को प्राथमिकता देती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में गुटनिरपेक्षता का उदय हुआ, जो तत्कालीन द्विध्रुवीय विश्व में किसी भी सैन्य गुट का हिस्सा बनने के बजाय सामरिक स्वायत्तता को बनाए रखने का एक साधन था। हालांकि 21वीं सदी के तीसरे दशक तक आते–आते वैश्विक भू–राजनीतिक संरचना में आए आमूलचूल परिवर्तनों ने भारत को अपनी परंपरागत नीतिगत जड़ता को त्यागने और बहु–संरेखण की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है।समकालीन वैश्विक व्यवस्था अब एकध्रुवीयता से निकलकर एक जटिल

Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.

A Special Issue for the papers accepted for publication in the International Multidisciplinary Conference on India's Foreign Policy and International Relations:A Future Roadmap (IFPIR-2026) (Hybrid Mode)(22-24 January 2026) Organized by Geo-Politics &Defence Study Research Cell, Faculty of Arts, Education and Social Sciences, Jai Narain Vyas University, Jodhpur, Rajasthan.

बहुध्रुवीयता की ओर बढ़ रही है, जहाँ शक्ति के केंद्र न केवल पश्चिम (अमेरिका और यूरोप) में हैं, बल्कि पूर्व (विशेषकर चीन और भारत) में भी तेजी से उभर रहे हैं। पंत(2021)के अनुसार भारत की वर्तमान विदेश नीति अब वैचारिक हठधर्मिता के स्थान पर कठोर यथार्थ वाद द्वारा निर्देशित हो रही है। आज की नीति केवल सिद्धांतों के प्रति निष्ठा की नहीं बल्कि ठोस राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति की है।इस बदलाव का सबसे प्रमुख कारक चीन का अभूतपूर्व आर्थिक और सैन्य उभार है। राजगोपालन (2021) ने रेखांकित किया है कि चीन की आक्रामक विस्तार वादी नीतियों और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर बढ़ते तनाव ने भारत की सामरिक गणनाओं को बदल दिया है। इसके परिणामस्वरूप भारत ने जहाँ एक ओर क्वाड जैसे सुरक्षा केंद्रित समूहों के माध्यम से अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ घनिष्ठता बढ़ाई है, वहीं दूसरी ओर वह शंघाई सहयोग संगठन और ब्रिक्स जैसे मंचों पर रूस और चीन के साथ भी संवाद बनाए रखता है।भारत की विदेश नीति के इस विकासवादी चरण को एस. जय शंकर (2020)ने द इंडिया वे के रूप में परिभाषित किया है। उनके तर्कानुसार एक अनिश्चित विश्व व्यवस्था में भारत को एक साथ कई दिशाओं में जुड़ावरखना चाहिए। यह बहु–संरेखण की नीति भारत को यह लचीलापन प्रदान करती है कि वह अपनी रक्षा जरूरतों के लिए रूस पर निर्भर रहते हुए भी अमेरिका के साथ उच्च–तकनीकी और रक्षा सहयोग बढ़ा सके।इसके अतिरिक्त भारत अब वैश्विक दक्षिण की आवाज बनकर उभर रहा है। वाष्णेय (2023) के शोध के अनुसार भारत का हालिया जी–20 नेतृत्व इस बात का प्रमाण है कि वह केवल अपनी स्वायत्तता की रक्षा नहीं कर रहा, बल्कि वैश्विक नियमों को आकार देने वाले एक अग्रणी राष्ट्र के रूप में कार्य कर रहा है। मोहन (2025) ने सही कहा था कि भारत अब एक संतुलनकारी शक्ति से नियम निर्धारकबनने की ओर बढ़ चुका है।अतः यह शोध पत्र विश्लेषण करेगा कि कैसे भारत ने सामरिक स्वायत्तताको एक रक्षात्मक कवच से बदलकर उसे एक सक्रिय बहु–संरेखण रणनीति में परिवर्तित किया है। यह संक्रमण न केवल भारत की सुरक्षा जरूरतों को पूरा करता है, बल्कि एक बहुध्रुवीय विश्व में भारत की महान शक्ति बनने की आकांक्षाओं को भी संरेखित करता है।

साहित्य की समीक्षा

भारत की विदेश नीति में आए संरचनात्मक बदलावों को समझने के लिए पिछले एक दशक का साहित्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्वानों ने सामरिक स्वायत्तता की पारंपरिक अवधारणा और समकालीन बहु–संरेखण के बीच के द्वंद्व को विभिन्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट किया है।

हर्ष वी. पंत(2021) ने अपनी पुस्तक 'इंडियाज फॉरेन पॉलिसी:द रेनसान्स ऑफ ए रेलेकटेंट पावर' में तर्क दिया है कि भारत अब एक अनिच्छुक शक्तिकी छवि से बाहर निकल चुका है। पंत का मानना है कि मोदी काल के दौरान भारत ने अपनी नीति में व्यावहारिकतावाद को सर्वोपरि रखा है। उनके अनुसार भारत की रणनीतिक स्वायत्तता अब अलगाववाद नहीं है बल्कि यह साझेदारी करने की वह क्षमता है जो भारत के राष्ट्रीय हितों को किसी भी बाहरी दबाव से ऊपर रखती है। उनका शोध यह स्पष्ट करता है कि भारत अब पश्चिम के साथ गठबंधन करने में हिचकिचाता नहीं है, बशर्ते वह भारत की रणनीतिक जरूरतों के अनुरूप हो।

एस. जयशंकर (2020) की कृति 'द इंडिया वे: स्ट्रेटेजिज फॉर एन अनसर्टन वर्ल्ड' इस विषय पर सबसे आधिकारिक प्राथमिक स्रोत मानी जा सकती है। जयशंकर तर्क देते हैं कि 1945 के बाद की वैश्विक व्यवस्था अब ढह रही है और हम एक बहुध्रुवीय दुनियामें नहीं बल्कि बहु–गठबंधन वाली दुनिया में रह रहे हैं। उन्होंने बहु–संरेखण को एक ऐसी कला बताया है जिसमें भारत को प्रतिस्पर्धी शक्तियों के बीच संतुलन बनाना होता है। जयशंकर के अनुसार भारत को अब शतरंज के बोर्ड पर कई गोटियों के साथ एक साथ खेलना होगा जो सामरिक स्वायत्तता की पुरानी परिभाषा को पूरी तरह बदल देता है।

सी. राजा मोहन (2015) ने अपने शोध में भारत की रणनीतिक संस्कृतिके बदलाव को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि भारत की नीति अब पूर्व की ओर देखो (लुक ईस्ट) से एक्ट ईस्ट (ऐक्ट ईस्ट) की ओर बढ़ी

है, जिसका अर्थ केवल आर्थिक जुड़ाव नहीं बल्कि रणनीतिक और सैन्य भागीदारी भी है। मोहन का तर्क है कि भारत की वर्तमान नीति यथार्थवादी शक्ति संतुलन पर आधारित है, न कि केवल वैचारिक नैतिकता पर।

राजेश्वरी पिल्लई राजगोपालन (2021) ने हिंद–प्रशांत (इंडो–पेसिफिक) क्षेत्र में भारत की भूमिका पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है। उनके शोध के अनुसार चीन का आक्रामक उदय भारत के लिए सबसे बड़ी रणनीतिक चुनौती है। राजगोपालन तर्क देती हैं कि भारत का बहु–संरेखण वास्तव में चीन को संतुलित करने की एक मजबूरी भी है और अवसर भी। उन्होंने क्वाड के प्रति भारत के बढ़ते झुकाव को सॉफ्ट अलाइनमेंटके रूप में परिभाषित किया है जहाँ भारत बिना किसी औपचारिक सैन्य संधि के सुरक्षा सहयोग बढ़ा रहा है।

मिलर (2018) ने अपनी पुस्तक 'व्हाई नेशन्स राइज' में भारत की विदेश नीति को उसकी घरेलू आर्थिक आकांक्षाओं से जोड़ा है। मिलर का विश्लेषण बताता है कि भारत की विदेश नीति अब विकास के लिए कूटनीतिपर केंद्रित है। भारत उन्हीं देशों के साथ अधिक गहराई से जुड़ रहा है जो उसके मेक इन इंडियाऔर डिजिटल इंडिया जैसे कार्यक्रमों में तकनीकी और वित्तीय योगदान दे सकते हैं।

हालिया शोधों में वाष्णेय (2023) ने ग्लोबल साउथ के संदर्भ में भारत की बहु–संरेखण नीति का विश्लेषण किया है। उनका मानना है कि भारत अब विकसित पश्चिम और उभरते हुए पूर्व के बीच एक पुल का कार्य कर रहा है। रूस–यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत की भूमिका का उल्लेख करते हुए वे बताते हैं कि कैसे भारत ने पश्चिम की नाराजगी के बावजूद रूस से ऊर्जा संबंध बनाए रखे और साथ ही यूक्रेन को मानवीय सहायता भी भेजी। यह मल्टी–वेक्टरनीति भारत की नई वैश्विक पहचान को दर्शाती है।

इयान हॉल (2019) ने मोदी एण्ड द रीइन्वेन्शन ऑफ इंडियन फॉरेन पॉलिसी में यह विश्लेषण किया है कि कैसे भारतीय संस्कृति और प्रतीकों (जैसे योग, बौद्ध धर्म) का उपयोग सॉफ्ट पावर के रूप में विदेश नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किया जा रहा है। हॉल का तर्क है कि भारत की विदेश नीति अब केवल सरकारी गलियारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सभ्यतागत राज्यके रूप में भारत को पुनः स्थापित करने का प्रयास है।

अंत में पंत और बोम्मकांति (2019) का लेख 'स्ट्रटीजिक औटोनोमी' 2.0यह निष्कर्ष निकालता है कि भारत की स्वायत्तता अब रक्षात्मक नहीं बल्कि सक्रिय है। पहले भारत गुटों से बचनेके लिए स्वायत्तता चाहता था भारत गुटों को प्रभावित करने के लिए अपनी स्वतंत्र सोच का उपयोग करता है

शोध पद्धति

इस शोध पत्र के लिए गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। चूँकि विदेश नीति एक गतिशील और बहुआयामी विषय है, इसलिए इसमें ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोणों का समन्वय किया गया है।

- **ऐतिहासिक पद्धतिः** भारत की गुटनिरपेक्षता से लेकर बहु–संरेखण तक की विकास यात्रा को समझने के लिए ऐतिहासिक क्रम का अध्ययन किया गया है।
- **दस्तावेजी विश्लेषणः** इस शोध के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का गहन विश्लेषण किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में भारत के विदेश मंत्रालय के आधिकारिक वक्तव्य, संयुक्त राष्ट्र में भारत के प्रतिनिधियों के भाषण और विभिन्न देशों के साथ हस्ताक्षरित द्विपक्षीय समझौते शामिल हैं।
- **साहित्यिक स्रोतों का उपयोगः** द्वितीयक स्रोतों के रूप में पिछले 10 वर्षों(2016 से 2026)के दौरान प्रकाशित प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं (जैसे– इंटरनेशनल सिक्युरिटी, द लैन्सिट ऑफ पोलिटिकल साइंस) और प्रमुख विद्वानों की पुस्तकों का संदर्भ लिया गया है।
- **तुलनात्मक दृष्टिकोणः** भारत के विभिन्न वैश्विक शक्तियों (जैसे अमेरिका बनाम रूस) के साथ संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ताकि बहु–संरेखण की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जा सके।

विषयवस्तुः विस्तृत विश्लेषण

बहुध्रुवीयता के वर्तमान युग में भारत की विदेश नीति अब केवल आदर्शवाद पर आधारित नहीं है, बल्कि यह एक यथार्थवादी बहु–संरेखण की ओर बढ़ चुकी है। इस विश्लेषण को निम्नलिखित उप–शीर्षकों के माध्यम से समझा जा सकता है

सामरिक स्वायत्तता का पुनर्व्याख्यान और परिवर्तन

1950 के दशक में सामरिक स्वायत्तता का अर्थ वैश्विक गुटबाजी से दूरी बनाना था। लेकिन समकालीन संदर्भ में इसका अर्थ सक्रिय सहभागिताहै। पंत और बोम्मकांति (2019) के अनुसार भारत ने यह महसूस किया है कि 21वीं सदी की चुनौतियों (जैसे साइबर सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और आतंकवाद) से अकेले नहीं निपटा जा सकता। आज भारत की स्वायत्तता इस बात में निहित है कि वह अपनी रक्षा जरूरतों के लिए रूस सेएस –400मिसाइल प्रणाली खरीदता है और साथ ही अमेरिका के साथ आई सी ई टी(इनौगरल क्रिटिकल एण्ड इमर्जिग टेक्नॉलोजी) जैसे रणनीतिक समझौतों पर हस्ताक्षर करता है। यह एक ऐसी नीति है जहाँ भारत किसी का कनिष्ठ भागीदार बने बिना सब के साथ लाभप्रद संबंध रखता है।

चीन का उदय और सुरक्षात्मक यथार्थवाद

चीन की बढ़ती सैन्य शक्ति और हिंद–प्रशांत क्षेत्र में उसकी आक्रामकता ने भारत की विदेश नीति को 'सुरक्षात्मक यथार्थवाद' की ओर धकेला है। राजगोपालन (2021)का तर्क है कि भारत अब 'सॉफ्ट बैलेंसिंग' के बजाय 'हार्ड बैलेंसिंग' की ओर बढ़ रहा है। क्वाड में भारत की बढ़ती सक्रियता और मालाबार जैसे सैन्य अभ्यास यह दर्शाते हैं कि भारत अब चीन को संतुलित करने के लिए पश्चिमी शक्तियों के साथ खड़े होने में संकोच नहीं करता। हालांकि भारत ने क्वाड को एक सैन्य गठबंधन बनाने के बजाय इसे साझा हितों के समूह के रूप में परिभाषित करके अपनी सामरिक स्वायत्तता को सुरक्षित रखा है।

रूस–यूक्रेन संघर्षः बहु–संरेखण की अग्निपरीक्षा

रूस –यूक्रेन युद्ध ने भारत की बहु–संरेखण नीति के समक्ष सबसे कठिन चुनौती पेश की। एक ओर अमेरिका और यूरोपीय संघ का दबाव था कि भारत रूस की निंदा करे वहीं दूसरी ओर रूस के साथ भारत के गहरे रक्षा और ऊर्जा संबंध थे। वाष्णेय (2023)के अनुसार भारत ने यहाँ मध्यम मार्ग अपनाया। भारत ने न केवल रूस से रिकॉर्ड मात्रा में कच्चा तेल खरीदा ताकि घरेलू अर्थव्यवस्था में महंगाई को नियंत्रित किया जा सके, बल्कि संयुक्त राष्ट्र में तटस्थ रुख अपनाते हुए बार–बार संवाद और कूटनीति की वकालत की। यह निर्णय इस बात का प्रमाण है कि भारत अब वैश्विक दबाव के बजाय इंडिया फर्स्ट की नीति पर चलता है।

आर्थिक कूटनीति और ग्लोबल साउथ का नेतृत्व

भारत की विदेश नीति अब केवल सीमाओं की सुरक्षा तक सीमित नहीं है। मिलर (2018) के अनुसार भारत अपनी विदेश नीति का उपयोग राष्ट्रीय विकास के उपकरण के रूप में कर रहा है। मेक इन इंडिया को बढ़ावा देने के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और तकनीकी हस्तांतरण पर जोर दिया जा रहा है। इसके साथ ही भारत ने खुद को ग्लोबल साउथकी आवाज के रूप में स्थापित किया है। जी–20 की 2023 की अध्यक्षता के दौरान अफ्रीकी संघ को स्थायी सदस्यता दिलाना भारत की उस कूटनीतिक जीत का हिस्सा है जहाँ वह विकासशील और विकसित देशों के बीच एक सेतु का कार्य कर रहा है।

यूरेशिया और पश्चिम एशिया में संतुलन

भारत की लुक वेस्ट नीति अब लिंक वेस्ट में बदल गई है। भारत ने इजराइल और अरब देशों (विशेषकर यूएई और सऊदी अरब) के साथ एक साथ प्रगाढ़ संबंध बनाए हैं। आई2 यू2 (भारत, इजराइल, यूएई, अमेरिका) जैसे नए समूहों का गठन यह दर्शाता है कि भारत मध्य पूर्व की जटिल राजनीति में भी अपने हितों को

साधने में सक्षम है। यह बहु–संरेखण का उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ भारत वैचारिक संघर्षों सेऊपर उठकर केवल आर्थिक और सुरक्षात्मक लाभों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

विवेचना

भारत की विदेश नीति का सामरिक स्वायत्ततासे बहु–संरेखण की ओर संक्रमण केवल एक शब्दावली का बदलाव नहीं है बल्कि यह भारत के वैश्विक आत्मविश्वास और उसकी बढ़ती आर्थिक शक्ति का परिचायक है। इस नीति की विवेचना निम्नलिखित प्रमुख तर्कों के आधार पर की जा सकती है:

वैचारिक तटस्थता बनाम राष्ट्रीय हित

शीत युद्ध के दौरान भारत की तटस्थता अक्सर नैतिकता और आदर्शवाद के लबादे में लिपटी होती थी। लेकिन वर्तमान बहु–संरेखण पूरी तरह से परिणामोन्मुखी यथार्थवाद पर आधारित है। जैसा कि जयशंकर (2020) ने स्पष्ट किया है आज की दुनिया में कोई स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होते, केवल स्थायी हित होते हैं। विवेचना का मुख्य बिंदु यह है कि भारत अब किसी भी वैश्विक शक्ति के साथ संबंध बनाते समय अपनी शर्तों को स्पष्ट रखता है। उदाहरण के लिए अमेरिका के साथ सैन्य सहयोग बढ़ाते समय भारत ने कभी भी यूक्रेन मुद्दे पर रूस का साथ पूरी तरह छोड़ने का समझौता नहीं किया। यह रणनीतिक संतुलन भारत को एक स्वतंत्र ध्रुव के रूप में स्थापित करता है।

चीन के साथ असममित संबंध और संतुलन की चुनौती

विवेचना का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम चीन के साथ भारत के जटिल संबंध हैं। जहाँ भारत चीन को एक आर्थिक अवसर के रूप में देखता है, वहीं सीमा विवाद (एल ओ सी) और हिंद महासागर में चीन की बढ़ती पैठ इसे एक सामरिक खतरे में बदल देती है। राजगोपालन (2021) का तर्क है कि भारत की बहु–संरेखण नीति का एक बड़ा हिस्सा चीन–केंद्रित है। भारत का क्वाड में शामिल होना और साथ ही साथ ब्रिक्स में चीन के साथ बैठना एक डबल–एज्ड रणनीति है। भारत चाहता है कि वह चीन के साथ आर्थिक व्यापार (जो100अरब डॉलर से अधिक है) को भी बनाए रखे और साथ ही उसकी विस्तार वादी नीतियों को रोकने के लिए वैश्विक गठबंधन भी बनाए। यह हेजिंगकी नीति है, जहाँ भारत अपने जोखिमों को कम करने के लिए कई नावों पर सवार है।

मध्य मार्ग का जोखिमः दो नावों की सवारी

आलोचकों का तर्क है कि बहु–संरेखण की नीति भारत को एक अविश्वसनीय भागीदार बना सकती है। यदि भविष्य में अमेरिका और चीन या अमेरिका और रूस के बीच संघर्ष और तीव्र होता है तो भारत के लिए संतुलन बनाए रखना लगभग असंभव हो जाएगा। पंत और बोम्मकांति (2019) ने इस ओर संकेत किया है कि रणनीतिक स्वायत्तता2ण्0को तब सबसे बड़ी चुनौती मिलेगी जब भारत को किसी एक पक्ष को चुनने के लिए मजबूर किया जाएगा। उदाहरण के तौर पर रूस से तेल खरीदना और अमेरिकी प्रतिबंधों से बचना एक बहुत ही बारीक कूटनीतिक धागे पर चलने जैसा है। विवेचना यहाँ यह उठती है कि क्या भारत की यह बहु–पक्षीय निष्ठा लंबे समय तक टिकाऊ है?

विश्व–मित्र और ग्लोबल साउथ की कूटनीति

विवेचना का एक सकारात्मक पक्ष यह है कि भारत ने खुद को ग्लोबल साउथ (विकासशील देशों) के मसीहा के रूप में पुनः स्थापित किया है। वाष्णेय (2023)के अनुसार भारत का बहु–संरेखण केवल महाशक्तियों तक सीमित नहीं है। भारत ने अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और मध्य–पूर्व के देशों के साथ अपने संबंधों को गहरा किया है। जी–20अध्यक्षता के दौरान भारत ने यह सिद्ध किया कि वह वैश्विक एजेंडे को पश्चिम–केंद्रित होने से रोककर मानव–केंद्रित बना सकता है। यह भारत की सॉफ्ट पावर और हार्ड पावर का एक अनूठा संगम है। भारत अब केवल एक सुरक्षा लेने वाला राष्ट्र नहीं बल्कि एक सुरक्षा प्रदाता और आपदा राहत में अग्रणी राष्ट्र बन गया है।

घरेलू राजनीति और विदेश नीति का अंतर्संबंध

एक महत्वपूर्ण बिंदु यह भी है कि भारत की विदेश नीति अब घरेलू आकांक्षाओं से कटी हुई नहीं है। मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और डिजिटल इंडिया जैसे कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए विदेशी निवेश और तकनीक की आवश्यकता है। मिलर (2018) के अनुसार भारत की बहु–संरेखण नीति उसकी आर्थिक प्रगति की इंजन है। जब भारत फ्रांस के साथ राफेल सौदा करता है या जापान के साथ बुलेट ट्रेन परियोजना पर काम करता है तो यह कूटनीति सीधे तौर पर घरेलू रोजगार और बुनियादी ढांचे से जुड़ती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण और विवेचना के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत की विदेश नीति एक ऐतिहासिक परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। सामरिक स्वायत्तताअब एक निष्क्रिय सुरक्षा कवच नहीं बल्कि एक सक्रिय हथियार है जिसका उपयोग भारत अपने बहु–संरेखण को साधने के लिए कर रहा है।

- **यथार्थवाद का उदय:** भारत अब वैचारिक गुटबाजी के बजाय हित–आधारितसंरेखण को प्राथमिकता देता है।
- **बहुध्रुवीयता की स्वीकार्यता:** भारत ने यह स्वीकार कर लिया है कि एकध्रुवीय विश्व का अंत हो चुका है और उसे उभरते हुए नए शक्ति केंद्रों के साथ तालमेल बिठाना होगा।
- **चीन का प्रभाव:** भारत की अधिकांश रणनीतिक चालें चीन के उदय और उसके संभावित खतरों को ध्यान में रखकर चली जा रही हैं।
- **वैश्विक नेतृत्व:** बहु–संरेखण ने भारत को वैश्विक मंच पर एक सेतु की भूमिका दी है, जिससे भारत की स्वीकार्यता पूर्व और पश्चिम दोनों ही गुटों में बढ़ी है।

अंततः भारत की विकसित विदेश नीति यह स्पष्ट करती है कि 21वीं सदी का भारत अब विश्व व्यवस्था के नियमों का केवल पालन करने वाला देश नहीं बल्कि नियमों को बनाने वाला एक अग्रणी राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है। अमृत काल में भारत का लक्ष्य अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को अक्षुण्ण रखते हुए एक ऐसी बहुध्रुवीय व्यवस्था का निर्माण करना है जहाँ भारत एक अनिवार्य स्तंभ के रूप में स्थापित हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हाल, आई. (2019). मोदी एण्ड द रीइन्वेंशन ऑफ इंडियन फॉरेन पॉलिसी, ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. जयशंकर, एस. (2020). द इंडिया वे: स्ट्रेटेजीज फॉर एन अनसर्टेन वर्ल्ड, हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया।
3. मिलर, एम. सी. (2018). वाय नेशंस राइज:नैरेटिव्स एण्ड द पाथ टू ग्रेट पावर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. मोहन, सी. आर. (2015). मोदीज वर्ल्ड: एक्सपेंडिंग इंडियाज स्फीयर ऑफ इन्फ्लुएंस, हार्पर कॉलिन्स इंडिया।
5. पंत, एच. वी. (2021). इंडियाज फॉरेन पॉलिसी: द रेनेसां ऑफ अ रिलक्टेंट पावर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. पंत, एच. वी., एवं बोम्मकंती, के. (2019). स्ट्रेटेजिक ऑटोनॉमी 2.0: रियलिज्म इन इंडियन फॉरेन पॉलिसी, इंटरनेशनल स्टडीज, 56(1) 39–52

7. राजगोपालन, आर. पी. (2021). इंडियाज स्ट्रेटेजिक चॉइसस: चाइना एण्ड द बैलेंस ऑफ पावर इन द इंडो–पैसिफिक, जर्नल ऑफ इंडो–पैसिफिक अफेयर्स, 4 (2),5–18

8. शरण, एस. (2017). हाउ इंडिया सीज द वर्ल्ड: कौटिल्य टू द 21वीं सेंचुरी, जगरनॉट बुक्स।

9. थरूर, एस. (2012). पैक्स इंडिका: इंडिया एण्ड द वर्ल्ड ऑफ द 21वीं सेंचुरी, पेंग्विन बुक्स इंडिया।

10. वरष्णेय, ए. (2023). इंडियाज ग्लोबल एस्पिरेशन एण्ड द चौलेंजेस ऑफ मल्टी–अलाइनमेंट, फॉरेन अफेयर्स रिव्यू,12(4),102–115.

❑❑❑